भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शैक्षिक प्रदर्शन : एक सैद्धान्तिक विमर्श

नितेश कुमार यादव[1], डॉ. विभा मिश्रा[2]

[1]*शोधार्थी, शिक्षा, अटल बिहारी वाजपेयी वि.वि. , बिलासपुर (छ.ग.)*

[2]*प्राचार्य, डी. पी. विप्र शिक्षा महाविद्यालय, कोनी बिलासपुर (छ.ग.)*

कवपण्वतहध10ण्64643ध्श्रप्त्ज्13प्1.204966.459

***सारांश* —भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय सभ्यता की सुदीर्घ बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक विरासत का एक एकीकृत स्वरूप है, जिसका उद्भव अनुभव, निरीक्षण, परीक्षण एवं गहन विश्लेषण से हुआ है। इसमें ज्ञान, विज्ञान और जीवन–बोध के ऐसे घटक सम्मिलित हैं जो मानव, समाज, प्रकृति एवं ब्रह्मांड के मध्य सामंजस्यपूर्ण संबंधों की स्थापना पर बल देते हैं। वर्तमान शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता इसलिए महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि वर्तमान शिक्षण पद्धति प्रायः परीक्षा–प्रधान, प्रतिस्पर्धी और केवल उपयोगितावादी होती जा रही है, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा को मात्र सूचनाओं के संचय के रूप में नहीं, अपितु आत्म–उत्कर्ष, चारित्रिक निर्माण, नैतिक संवेदनशीलता एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करती है। प्रस्तुत शोध–लेख का लक्ष्य भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य अंतर्संबंधों का सैद्धान्तिक मूल्यांकन करना है। यह शोध इस अवधारणा पर केंद्रित है कि शैक्षणिक प्रदर्शन को मात्र परीक्षा के परिणामों या अंकों तक सीमित नहीं माना जा सकता, अपितु इसमें बोध, चिंतन, रचनात्मकता, आत्म–नियंत्रण, नैतिकता, मानसिक स्थिरता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विभिन्न पक्ष भी सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करने पर विशेष बल दिया है और इसे एक समग्र, बहुआयामी तथा सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ शिक्षा की आधारशिला के रूप में स्वीकार किया है। यह वैचारिक अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली शैक्षणिक प्रदर्शन को केवल संज्ञानात्मक उपलब्धि तक मर्यादित नहीं रखती, बल्कि उसे पूर्ण मानव विकास के दृष्टिकोण से विस्तृत करती है। योग, ध्यान, गुरु–शिष्य परंपरा, बहुभाषी दृष्टिकोण, अनुभवात्मक अधिगम और मूल्यपरक जीवन–दृष्टि जैसे कारक विद्यार्थी की एकाग्रता, आत्म–संयम, सांस्कृतिक चेतना, विश्लेषणात्मक चिंतन और सीखने की आंतरिक अभिप्रेरणा को सशक्त करते हैं। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक शिक्षा के लिए केवल ऐतिहासिक धरोहर मात्र नहीं है, अपितु वर्तमान एवं भविष्य की शैक्षिक चुनौतियों के निवारण हेतु एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रस्तुत करती है।**

***मुख्य शब्द* – भारतीय ज्ञान पद्धति, शैक्षिक प्रदर्शन, सर्वांगीण शिक्षा**

I. प्रस्तावना

भारत की बौद्धिक विरासत विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं संपन्न परंपराओं में से एक स्वीकार की जाती है, जिसके अंतर्गत वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद, योग, गणित, ज्योतिष, व्याकरण, कला, साहित्य एवं शासन–प्रबंधन संबंधी विचारों का व्यापक विस्तार हुआ है। भारतीय परंपरा में ज्ञान को मात्र बाहरी सूचनाओं का संग्रह नहीं माना गया, अपितु इसे जीवन को मार्गदर्शित करने वाली शक्ति, आत्म–साक्षात्कार का माध्यम और लोक–कल्याण का मूल आधार समझा गया है। परिणामस्वरूप, शिक्षा का लक्ष्य केवल व्यावसायिक कुशलता प्राप्त करना नहीं, अपितु विवेक, आत्म–नियंत्रण, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक चेतना का संवर्धन करना था।

समकालीन वैश्विक शैक्षिक परिदृश्य में, जहाँ अधिगम के परिणामों का आकलन प्रायः अंकों, ग्रेडों और प्रतिस्पर्धात्मक सफलता के आधार पर किया जा रहा है, वहाँ भारतीय ज्ञान पद्धति शिक्षा के विस्तृत एवं मानवीय उद्देश्यों का स्मरण कराती है। यह व्यवस्था प्रतिपादित करती है कि शैक्षणिक उपलब्धि का वास्तविक तात्पर्य केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करना नहीं, अपितु ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग, जीवन–कौशल, नैतिक निर्णय क्षमता, मानसिक स्वास्थ्य एवं समाज के प्रति उपयोगी दृष्टिकोण भी है। इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान पद्धति और शैक्षणिक प्रदर्शन के अंतर्संबंधों का विश्लेषण अत्यंत सामयिक हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत की प्राचीन एवं निरंतरतापूर्ण ज्ञान–परंपरा को शिक्षा के पुनर्गठन हेतु एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया है। इस नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि भारतीय ज्ञान पद्धति को वैज्ञानिक, बहुभाषिक एवं अंतर्विषयक दृष्टिकोण से स्कूली तथा उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में समाहित किया जाना चाहिए। अतः, प्रस्तुत शोध–पत्र भारतीय ज्ञान पद्धति की अवधारणा, उसके दार्शनिक आधारों, शिक्षा में उसकी भूमिका तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर उसके सैद्धांतिक प्रभाव का विवेचन प्रस्तुत करता है।

II. भारतीय ज्ञान पद्धति : अवधारणा एवं स्वरूप

भारतीय ज्ञान पद्धति से तात्पर्य उस एकीकृत ज्ञान–परंपरा से है, जिसका उद्भव भारतीय सभ्यता में अनुभव, अवलोकन, प्रयोग, तर्क एवं आध्यात्मिक बोध के माध्यम से हुआ है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, भारतीय ज्ञान पद्धति में ज्ञान, विज्ञान एवं जीवन–दर्शन के वे विविध आयाम सम्मिलित हैं, जिन्होंने शिक्षा, कला, प्रशासन, न्याय, स्वास्थ्य, कृषि, वाणिज्य, भाषा एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। यह प्रणाली केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं है, अपितु यह मौखिक, आचरणगत, सांस्कृतिक एवं लोक–परंपराओं के माध्यम से भी हस्तांतरित होती रही है। भारतीय ज्ञान पद्धति का स्वरूप बहुआयामी है। इसमें वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन साहित्य, स्मृतियाँ, नीतिशास्त्र, शिल्पशास्त्र, वास्तुशास्त्र, आयुर्वेद, योग, संगीत, नाट्यशास्त्र एवं गणितीय परंपराएँ समाहित हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, भारतीय ज्ञान पद्धति किसी विशिष्ट विषय का ज्ञान मात्र नहीं है, बल्कि यह जीवन को समग्रता में समझने और उसे व्यवस्थित करने का एक ज्ञान–संरचना तंत्र है। इस पद्धति की प्रधान विशेषता इसकी समग्रता है। यहाँ ज्ञान को धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला एवं सामाजिक व्यवहार के साथ अंतर्संबंधित माना जाता है। इस कारण भारतीय ज्ञान पद्धति में शिक्षा का अर्थ बौद्धिक प्रशिक्षण के साथ–साथ नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक विकास भी है। यही समग्र दृष्टिकोण इसे समकालीन शैक्षिक विमर्श में विशिष्ट एवं प्रासंगिक बनाता है।

III. भारतीय ज्ञान पद्धति के दार्शनिक आधार

भारतीय ज्ञान पद्धति के दार्शनिक आधार अत्यंत विस्तृत एवं गहन हैं। वैदिक परंपरा में ज्ञान को सत्य की अन्वेषण, श्ऋतश के अनुपालन और जीवन के संतुलन से संबद्ध किया गया है। उपनिषदों में ज्ञान का परम

लक्ष्य आत्मा और ब्रह्म के संबंध का अनुभव प्राप्त करना माना गया है, जिससे शिक्षा का स्वरूप केवल भौतिक उन्नति तक सीमित न रहकर आंतरिक जागरण से भी जुड़ गया। इस प्रकार, भारतीय दृष्टिकोण में शिक्षा ज्ञानार्जन के साथ–साथ आत्म–अनुशासन एवं आत्म–साक्षात्कार की एक निरंतर प्रक्रिया है। दार्शनिक दृष्टिकोण से न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत जैसी विचारधाराओं ने ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र, प्रमाण, सत्य, आत्मन्, जगत और मोक्ष संबंधी विषयों पर गहन विमर्श प्रस्तुत किया है। न्याय संप्रदाय ने तर्क एवं प्रमाणों के माध्यम से बौद्धिक सुदृढ़ता को पुष्ट किया, वहीं योग दर्शन ने चित्त की वृत्तियों के निरोध, आत्म–नियंत्रण और आंतरिक बोध को प्राथमिकता दी। सांख्य दर्शन ने विवेक और विभेद–ज्ञान की महत्ता को प्रतिपादित किया, जबकि वेदांत ने आत्मिक एकता और सार्वभौमिक मानवीय दृष्टिकोण की स्थापना की। ये समस्त परंपराएं शिक्षण हेतु सुदृ ढ़ वैचारिक आधार प्रदान करती हैं। बौद्ध एवं जैन संप्रदायों ने भी भारतीय ज्ञान पद्धति को संवर्धित करने में योगदान दिया है। बौद्ध विचारधारा ने करुणा, सचेतनता, मध्यम मार्ग और अनुभवजन्य बोध पर बल दिया, जबकि जैन दर्शन ने सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चारित्र को जीवन एवं शिक्षा का आधारभूत स्तंभ माना। इससे यह विदित होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का दार्शनिक आधार बहुलवादी, संवादात्मक, तर्कसंगत और नैतिक है, जो शिक्षा को बहुआयामी स्वरूप प्रदान करता है।

IV. शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व

भारतीय ज्ञान पद्धति शिक्षा को सर्वांगीण विकास की एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करती है, जिसमें कायिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संतुलन पर विशेष बल दिया जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का लक्ष्य मात्र आजीविका या आर्थिक उन्नति प्राप्त करना नहीं, अपितु ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो विवेकपूर्ण, अनुशासित, सदाचारी और समाज के लिए उपयोगी हो। अतः भारतीय शैक्षिक दृ ष्टिकोण में मूल्य, जीवन–कौशल, आत्म–विनियमन, लोक–कल्याण और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता जैसे घटक शिक्षा के अविभाज्य अंग हैं। गुरु–शिष्य परंपरा भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक अत्यंत महत्वपूर्ण शैक्षणिक स्तंभ है। इसमें शिक्षक मात्र सूचनाओं का प्रदाता नहीं, अपितु एक पथप्रदर्शक, प्रेरक और चरित्र–निर्माता की भूमिका में होता है। अध्येता और शिक्षक के मध्य जीवंत, नैतिक और विश्वसनीय संबंध अधिगम की गुणवत्ता को गहन बनाते हैं, क्योंकि यहाँ शिक्षा एक मानवीय संवाद है, न कि कोई यांत्रिक क्रिया।

भारतीय ज्ञान प्रणाली अनुभवात्मक अधिगम, निरंतर अभ्यास, मनन और आत्म–मंथन को भी अत्यधिक महत्ता प्रदान करती है। योग, ध्यान, स्वाध्याय, श्रवण, मनन और निदिध्यासन जैसी पद्धतियां शिक्षण को सक्रिय और आत्मसात् करने योग्य बनाती हैं। इसी कारण यह प्रणाली ऐसी शिक्षा का समर्थन करती है जिसमें ज्ञान केवल सैद्धांतिक न हो, अपितु उसे जीवन में उतारा और अनुभव किया जा सके।

V. शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा

सामान्यतः शैक्षिक प्रदर्शन को परीक्षा के अंकों, ग्रेड, उपलब्धियों और कक्षा–आधारित परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिभाषित किया जाता है, किंतु यह व्याख्या अपूर्ण है। यदि शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य सीखने की गुणवत्ता, बोध, तार्किकता, सृजनात्मकता, आत्म–अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास है, तो शैक्षिक प्रदर्शन की अवधारणा भी व्यापक होनी चाहिए। इस दृष्टि से शैक्षिक प्रदर्शन एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक, नैतिक और व्यावहारिक आयाम समाहित होते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक निष्पादन को मात्र बाह्य सफलता का मानक न मानकर, आंतरिक परिपक्वता का परिचायक स्वीकार किया जा सकता है। यदि किसी विद्यार्थी में एकाग्रता, सहनशीलता, तार्किक क्षमता, आत्म–संयम, अनुशासन, संवेदना और नैतिक मूल्यों का अभ्युदय हो रहा है, तो इसे भी शैक्षिक उपलब्धि का एक अनिवार्य पक्ष माना जाना चाहिए। अतः, शैक्षिक प्रदर्शन को केवल परीक्षा–केंद्रित संकुचित दृष्टिकोण से मुक्त कर समग्र व्यक्तित्व के विकास के रूप में परिलक्षित करना अधिक तर्कसंगत होगा। समसामयिक शैक्षिक विमर्श में भी अधिगम के परिणामों को व्यापक रूप से व्याख्यायित करने की अनिवार्यता पर बल दिया जा रहा है। विश्लेषणात्मक चिंतन, समस्या निवारण क्षमता, जीवनोपयोगी कौशल, भावनात्मक स्थिरता, सृजनात्मकता और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता जैसे गुण शिक्षा की गुणवत्ता के मुख्य मापदंड माने जा रहे हैं। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली शैक्षिक प्रदर्शन की एक अधिक संतुलित एवं मानवीय व्याख्या प्रस्तुत करती है।

VI. भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं शैक्षिक निष्पादन का सैद्धांतिक अंतर्संबंध

भारतीय ज्ञान प्रणाली और शैक्षिक प्रदर्शन के मध्य सैद्धांतिक स्तर पर गहन संबंध विद्यमान है, क्योंकि प्ज्ञै शिक्षा को मात्र बौद्धिक कौशल का उपकरण नहीं, अपितु जीवन के उत्कर्ष का माध्यम मानता है। यदि विद्यार्थी को ऐसी शिक्षा प्राप्त होती है जो उसकी एकाग्रता, आंतरिक अभिप्रेरणा, मूल्य–बोध, आत्मविश्वास और चिंतनशीलता को संवर्धित करे, तो उसका शैक्षिक प्रदर्शन अधिक अर्थपूर्ण और चिरस्थायी हो सकता है। इस रूप में, भारतीय ज्ञान प्रणाली शैक्षिक प्रदर्शन की गुणवत्ता को आंतरिक रूप से प्रभावित करने वाली एक वैचारिक रूपरेखा निर्मित करती है। योग एवं ध्यान जैसी भारतीय पद्धतियाँ विद्यार्थी के चित्त को स्थिर, जागरूक और एकाग्र करती हैं, जिससे अधिगम की प्रक्रिया अधिक सुदृढ़ होती है। इसी प्रकार, गुरु–शिष्य परंपरा शिक्षण प्रक्रिया में आत्मीयता और उत्तरदायित्व का भाव जागृत करती है, जबकि स्वाध्याय एवं मनन विद्यार्थी में स्वतंत्र विचार और स्व–निर्देशित अधिगम को प्रोत्साहित करते हैं। न्याय एवं अन्य दार्शनिक परंपराएँ तर्क, प्रमाण और विवेक के आधार पर ज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती हैं, जिससे आलोचनात्मक चिंतन का विकास होता है। सैद्धांतिक रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली शैक्षिक प्रदर्शन के चार प्रमुख आयामों को प्रभावित करती है। प्रथम, यह संज्ञानात्मक क्षमताओं को समृद्ध करती हैय द्वितीय, यह भावनात्मक संतुलन और आत्म–नियंत्रण को सुदृढ़ करती हैय तृतीय, यह नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का बीजारोपण करती हैय और चतुर्थ, यह अधिगम को सांस्कृतिक सार्थकता प्रदान करती है। इस प्रकार, प्ज्ञै–आधारित शिक्षा में शैक्षिक प्रदर्शन मात्र एक उपलब्धि न रहकर संतुलित व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बन जाता है।

VII. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को शैक्षिक पुनर्संरचना के ढांचे का एक अनिवार्य अंग स्वीकार किया है। नीति के अनुसार, भारत की प्राचीन एवं शाश्वत ज्ञान–परंपरा केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं है, बल्कि वर्तमान युग की चुनौतियों के समाधान हेतु एक सुदृढ़ आधार है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु नीति में प्ज्ञै को स्कूली एवं उच्च

शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण, अनुसंधान और भाषा संबंधी नीतियों के साथ एकीकृत करने की स्पष्ट रूपरेखा निर्धारित की गई है।

शिक्षा मंत्रालय के वक्तव्य के अनुसार, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में एकीकृत किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत गणित, खगोल विज्ञान, दर्शनशास्त्र, योग, स्थापत्य कला, चिकित्सा पद्धति, कृषि विज्ञान, अभियांत्रिकी, भाषाविज्ञान, साहित्य, क्रीड़ा, प्रशासन एवं संरक्षण जैसे विविध विषय समाहित हैं। यह नीति इस तथ्य पर भी बल देती है कि भारतीय भाषाएँ ज्ञान की परंपरा की मुख्य संवाहक हैं, अतः प्ज्ञै के सफल समावेश हेतु बहुभाषिकता एवं मातृभाषा आधारित शिक्षण अनिवार्य है।

UGC द्वारा IKS से संबंधित क्रेडिट पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहन देना, शिक्षकों के अभिविन्यास हेतु निर्देश जारी करना एवं प्ज्ञै केंद्रों की स्थापना जैसी योजनाएं इस नीति के व्यावहारिक क्रियान्वयन को प्रदर्शित करती हैं। इससे यह विदित होता है कि NEP 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा पद्धति में पुनः स्थापित करने हेतु एक नीतिगत ढांचा प्रदान करती है, जिसमें शैक्षिक परिणामों को अधिक समग्र, सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक बनाने की सामर्थ्य है।

VIII. वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता

समकालीन शिक्षण व्यवस्था अनेक विसंगतियों से ग्रस्त है, जिनमें परीक्षा–केंद्रित दृष्टिकोण, मानसिक तनाव, नैतिक मूल्यों का ह्रास, सांस्कृतिक अलगाव, यांत्रिक अधिगम एवं सीखने की स्वाभाविक अभिप्रेरणा का अभाव प्रमुख हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली इन समस्याओं के मध्य एक वैकल्पिक शैक्षणिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो पूर्णता, संतुलन, मानवीय संवेदना एवं आत्म–मंथन पर आधारित है। इस परिप्रेक्ष्य में, प्ज्ञै आधुनिक शिक्षा के लिए मात्र एक पारंपरिक विकल्प नहीं, अपितु सृजनात्मक पुनर्विचार का आधार है।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य, जीवन कौशल, सांस्कृतिक अस्मिता, पर्यावरणीय चेतना एवं नैतिक निर्णय क्षमता की महत्ता बढ़ रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली इन समस्त क्षेत्रों हेतु वैचारिक संसाधन उपलब्ध कराती है, क्योंकि इसमें योग, ध्यान, प्रकृति के अनुकूल जीवन शैली, लोक–कल्याण, आत्म–नियंत्रण एवं विविधता के प्रति सम्मान जैसे मूल्य निहित हैं। अतः प्ज्ञै को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करना समय की अनिवार्य आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण के इस दौर में अपनी सांस्कृतिक जड़ों से संबद्ध रहते हुए वैश्विक संवाद स्थापित करने की क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान प्रणाली विद्यार्थियों में सांस्कृतिक आत्मविश्वास एवं बौद्धिक स्वतंत्रता का संचार कर सकती है, जिससे वे न केवल अपनी विरासत का बोध कर सकें, बल्कि उसे आधुनिक संदर्भों में कुशलतापूर्वक लागू भी कर सकें। यही इसकी समकालीन प्रासंगिकता का मूल आधार है।

IX. चुनौतियां एवं संभावनाएं

भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षण पद्धति में सम्मिलित करने की प्रक्रिया जटिल है। मुख्य चुनौतियों में संस्थागत सहयोग की कमी, प्रशिक्षित शिक्षण शक्ति का अभाव, मानकीकृत अध्ययन सामग्री की अनुपलब्धता, पारंपरिक ज्ञान के प्रति संशय, भाषाई बाधाएं एवं औपनिवेशिक मानसिकता से प्रभावित ज्ञान–संरचना शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, भारतीय भाषाओं एवं मूल ग्रंथों तक सीमित पहुंच भी प्ज्ञै के प्रभावी एकीकरण में अवरोध उत्पन्न करती है।

एक अन्य जटिलता यह है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को अथवा केवल अतीत के प्रति श्रद्धा के रूप में देखा जाता है, अथवा उसे समकालीन वैज्ञानिक संवादों से विलग मान लिया जाता है। इसके विपरीत, यह अनिवार्य है कि IKS का विश्लेषण विवेचनात्मक, साक्ष्य–आधारित, संदर्भ–संवेदनशील एवं अंतर्विषयक दृष्टिकोण से किया जाए। यदि इस पद्धति का अनुसरण नहीं किया गया, तो इसका समावेश केवल औपचारिक या सतही रह जाएगा। तथापि, इसकी संभावनाएँ अत्यंत विस्तृत हैं। बहुभाषी अध्ययन सामग्री का सृजन, शिक्षक प्रशिक्षण, IKS केंद्रों की स्थापना, स्थानीय ज्ञान प्रणालियों का अभिलेखीकरण, प्रयोगात्मक अधिगम और अंतर्विषयक पाठ्यक्रम निर्माण के द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में सुदृढ़ता से एकीकृत किया जा सकता है। इस दिशा में किए गए प्रयासों से शिक्षा अधिक प्रासंगिक, सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़, मूल्यों से परिपूर्ण और समग्र बन सकती है।

X. निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली और शैक्षणिक दक्षता के मध्य संबंध का सैद्धांतिक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि IKS शिक्षा को मात्र सूचनाओं के संचय और परीक्षा परिणामों तक सीमित नहीं रखती, अपितु उसे मनुष्य के सर्वांगीण विकास की एक प्रक्रिया के रूप में प्रतिपादित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का लक्ष्य विवेक, आत्म–नियंत्रण, नैतिकता, आत्म–साक्षात्कार, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यावहारिक ज्ञान का विकास करना है, और यही घटक शैक्षणिक प्रदर्शन को अधिक व्यापक एवं सार्थक बनाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को मुख्यधारा की शिक्षा में सम्मिलित कर इस तथ्य को मान्यता दी है कि भारत की ज्ञान–परंपरा वर्तमान एवं भविष्य की शैक्षिक आवश्यकताओं हेतु भी अत्यंत उपयोगी है। यदि प्ज्ञै को वैज्ञानिक, आलोचनात्मक, बहुभाषी और अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में समाहित किया जाए, तो यह शिक्षा को अधिक समग्र, संवेदनशील और प्रभावशाली बना सकता है। अतः सैद्धांतिक रूप से यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली शैक्षणिक प्रदर्शन की एक नवीन व्याख्या प्रस्तुत करती है। यह उपलब्धि को केवल अंकों पर आधारित सफलता नहीं, बल्कि बौद्धिक परिपक्वता, नैतिक चरित्र, मानसिक संतुलन, सांस्कृतिक बोध और जीवन–कौशलों से युक्त विकास के रूप में देखती है। इसी कारण शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश केवल अतीत का स्मरण मात्र नहीं है, बल्कि भविष्य की संतुलित और मानवीय शिक्षा हेतु एक सुदृढ़ मार्गदर्शिका भी है।

संदर्भ ग्रन्थसूची

[1] Kumar and V. Kishor, “Integrating India’s Traditional Wisdom: Exploring the Role of NEP-2020 in the Indian Knowledge System,” *Educational Quest: An International Journal of Education and Applied Social Sciences*, vol. 15, no. 3, pp. 151–155, Dec. 2024, doi: 10.30954/2230-7311.3.2024.4.

[2] Puri, “The Importance of Indian Knowledge Systems (IKS) for Undergraduate Students,” *International Journal of English Teaching and*

Learning, vol. 4, no. 1, Mar. 2025, doi: 10.11648/j.ijetl.

[3] R. Mamgain, "Implementing NEP 2020 Recommendations: Promoting the Indian Knowledge System," *International Journal of Research and Analytical Reviews in Humanities and Arts*, vol. 5, no. 3, May 2025.

[4] M. S. Shyam, "Bhartiya Gyan Pranaliyan: Sampoorn Vikas Ka Marg," SVFCT, [online]. Available: https://svfct.com/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF-%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A4%BE%E0%A4%A8-%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A3%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%81-2/

[5] "Indian Knowledge Systems," *Wikipedia*, [online]. Available: https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Knowledge_Systems

[6] J. Divakar, *National Education Policy 2020: Significance of Indian Knowledge Traditions*. New Delhi, India: KD Publications, ISBN: 978-93-47336-57-7.

[7] *Press Information Bureau, Government of India*, "National Education Policy 2020 and Indian Knowledge Systems," [Online]. Available: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1751200

[8] R. K. Pandey, "Indian Knowledge System (IKS) and its Connect to Higher Education with Special Reference to National Education Policy (NEP) 2020," *International Journal of Advance Research in Multidisciplinary*, vol. 2, no. 4, pp. 29–32, 2024.

[9] "Indian Knowledge System and Higher Education," *Archives of Educational Research*, [online]. Available: https://archives.publishing.org.in/index.php/archives/article/view/2410